



Ahmadiyya Muslim Jamaat
INTERNATIONAL
(INDIA)

(A Registered Religious and Charitable Society in India under the Societies Registration Act XXI 1860)

Ref/الذکر SPM-380

Date/تاریخ 03-01-2026

130वाँ जलसा सालाना क्रादियान हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब के समापन भाषण के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें उन्होंने जमाअत को नेक्री के मार्ग पर चलने और समस्त मानवता के लिए करुणा अपनाने का आह्वान किया

“इस समय संसार भर में मेरी बात सुनने वाला प्रत्येक अहमदी सदैव यह स्मरण रखे कि हमें अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए तथा बैअत के वचन को पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास करते रहना चाहिए।” — हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब

28 दिसंबर 2025 को, अहमदिया मुस्लिम जमाअत के विश्व प्रमुख, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब, पाँचवें खलीफ़ा, ने भारत के क्रादियान में आयोजित अहमदिया मुस्लिम जमाअत के 130वें वार्षिक अधिवेशन (जलसा सालाना) के समापन सत्र को संबोधित किया।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने इस समापन सत्र की अध्यक्षता इस्लामाबाद स्थित मसरूर हॉल, टिलफ़ोर्ड से की, जबकि भारत के क्रादियान में जलसा स्थल पर तेरह हज़ार से अधिक प्रतिभागी एकत्रित हुए। साथ ही, यूनाइटेड किंगडम के टिलफ़ोर्ड स्थित इस्लामाबाद में भी तीन हज़ार तीन सौ से अधिक उपस्थित लोगों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की।

इसके अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने घोषणा की कि नाइजर, बुर्किना फ़ासो, सेनेगल, फ्रेंच गयाना, चेक गणराज्य, गिनी-बिसाऊ, टोगो, कांगो-किंशासा तथा जर्मनी सहित कई अन्य देशों में अहमदी मुसलमानों ने समापन सत्र में सहभागिता के लिए सामूहिक सभाओं का आयोजन किया था। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इन देशों में से कुछ में उसी समय अपने-अपने वार्षिक जलसा सालाना अधिवेशन भी आयोजित किए जा रहे थे, जो इस आयोजन की वास्तविक वैश्विक व्यापकता को दर्शाता है।

अपने संबोधन के दौरान, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने जलसा सालाना के वास्तविक उद्देश्य, बैअत (निष्ठा की प्रतिज्ञा) से जुड़ी जिम्मेदारियों तथा जमाअत के भीतर सच्ची धार्मिकता की अत्यंत आवश्यक आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

अपने संबोधन के प्रारंभ में, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने उल्लेख किया कि जलसा सालाना क़ादियान अपने समापन पर पहुँच चुका है और उन्होंने अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक, हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, मसीह मौउद (उन पर शांति हो), के शब्दों को स्मरण कराया, जिन्होंने इस सभा को सत्य के समर्थन और इस्लाम की महानता की स्थापना पर आधारित एक आयोजन बताया था, न कि कोई साधारण सम्मेलन।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस भविष्यवाणी की पूर्ति अब संसार भर में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है, क्योंकि विभिन्न देशों और पृष्ठभूमियों से लोग विश्व-भर में आयोजित होने वाले जलसों में भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि क़ादियान, जो कभी एक अनजान कस्बा था, अब अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का केंद्र बन चुका है, जहाँ दर्जनों देशों का प्रतिनिधित्व होता है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“आज हम मसीह मौउद (उन पर शांति हो) के इस कथन की पूर्ति को अपनी आँखों से देख रहे हैं, क्योंकि संसार के हर भाग में जलसे आयोजित हो रहे हैं और, जैसा कि उन्होंने भविष्यवाणी की थी, विभिन्न राष्ट्र उनमें सम्मिलित हो रहे हैं। क़ादियान का वह नगर, जो कभी अनजान था, आज अनेक देशों के लोगों और राष्ट्रों की सहभागिता का साक्षी बन चुका है। वर्तमान में उपलब्ध जानकारी के अनुसार, इस जलसे में सैंतीस देशों का प्रतिनिधित्व मौजूद है।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने आगे फ़रमाया:

“अतः यह एक स्पष्ट और प्रत्यक्ष प्रमाण है कि इस जलसे को अल्लाह तआला की विशेष सहायता प्राप्त है। किंतु इसके साथ-साथ हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इसकी बरकतों से वही लोग लाभान्वित होंगे, जो मसीह मौउद (उन पर शांति हो) से की गई अपनी बैअत की प्रतिज्ञा पर दृढ़ता से कायम रहेंगे। जो लोग अपनी आध्यात्मिक और नैतिक सुधार तथा उन्नति की ओर ध्यान नहीं देते, वे इसकी बरकतों से लाभ नहीं उठा सकते।”

संबोधन का एक केंद्रीय विषय बैअत (निष्ठा की प्रतिज्ञा) का वास्तविक अर्थ और उसकी शर्तें थीं। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने स्पष्ट किया कि बैअत कोई औपचारिक या रस्मी कार्य नहीं है, बल्कि यह एक आजीवन अनुबंध है, जिसके अंतर्गत शिर्क (ईश्वर के साथ किसी को साझी ठहराना) के हर रूप को त्यागना अनिवार्य है। इसमें शिर्क के छिपे और सूक्ष्म रूप भी सम्मिलित हैं, जैसे कि अल्लाह के स्थान पर अपने अहंकार, धन, शक्ति या सांसारिक योजनाओं और उपायों पर निर्भर होना।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने मसीह मौउद (उन पर शांति हो) द्वारा परिभाषित शिर्क के वास्तविक अर्थ को भी समझाया। मसीह मौउद (उन पर शांति हो) के शब्दों को उद्धृत करते हुए, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“स्मरण रखो कि सच्ची तौहीद [अल्लाह तआला की एकता पर विश्वास], जिसकी पुष्टि अल्लाह हमसे चाहता है और जिस पर मुक्ति निर्भर करती है, यह है कि अल्लाह को हर प्रकार के साझीदार से मुक्त समझा जाए—चाहे वह कोई मूर्ति हो, कोई मनुष्य हो, सूर्य या चंद्रमा हो, स्वयं अपना अस्तित्व हो, या अपनी योजनाएँ, उपाय और छल-कपट हों—और किसी को भी उसके साथ शक्ति का स्वामी न माना जाए। अर्थात् सदैव यह ध्यान में रखा जाए कि किसी को भी उसके ऊपर कोई अधिकार या शक्ति प्राप्त नहीं है। केवल अल्लाह तआला ही वह सत्ता है जो मेरे प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने, उसे पूर्णता तक पहुँचाने और उससे उत्तम परिणाम उत्पन्न करने की शक्ति रखती है; अतः उसी के समक्ष मुझे सिर झुकाना चाहिए।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने स्पष्ट किया कि आधुनिक युग में नैतिक चुनौतियों की एक विस्तृत शृंखला अत्यधिक बढ़ गई है, और इनसे स्वयं की रक्षा करने के लिए अनुशासन और संयम की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जो लोग बैअत में प्रवेश करते हैं, वे हर परिस्थिति में सत्यनिष्ठा अपनाने तथा नैतिक पवित्रता को बनाए रखने का संकल्प करते हैं—न केवल अपने कार्यों में, बल्कि अपने विचारों और आचरण में भी।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने यह भी उल्लेख किया कि समकालीन मीडिया और उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ प्रायः लोगों को ऐसे विषयवस्तु के संपर्क में लाती हैं, जो भले ही सीधे किसी दुष्कर्म की ओर न ले जाएं, फिर भी हानिकारक विचारों को जन्म दे सकती हैं और व्यक्ति की नैतिक सीमाओं को कमजोर कर देती हैं। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ऐसे प्रभावों से बचना तथा अपनी दृष्टि और विचारों की रक्षा करना हमारे ईमान का एक अनिवार्य अंग है।

उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि बैअत (निष्ठा की प्रतिज्ञा) की वास्तविक भावना को पूरा करने के लिए हर प्रकार की अनैतिकता, अक्षीलता, अन्याय, बेईमानी, अव्यवस्था और विद्रोह से दूर रहना आवश्यक है। व्यक्ति को अपनी सांसारिक इच्छाओं के अधीन नहीं होना चाहिए, बल्कि आत्म-संयम का अभ्यास करना चाहिए। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि केवल ऐसे प्रभावों से स्वयं की रक्षा करके ही कोई व्यक्ति अपनी बैअत से जुड़ी जिम्मेदारियों को वास्तविक रूप से निभा सकता है।

इसके उपरांत, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने मसीह मौउद (उन पर शांति हो) द्वारा पाँच समय की नमाज़ों के महत्व पर दिए गए विशेष बल का उल्लेख किया।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“मसीह मौउद (उन पर शांति हो) ने फ़रमाया कि जो लोग मुझसे बैअत में शामिल हुए हैं, उनके लिए अनिवार्य है कि वे पाँच समय की नमाज़ें अदा करें और तहज़ुद की नमाज़ (भोर से पूर्व की नफ़्ल नमाज़) पढ़ने का भी प्रयास करें। उन्हें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दरूद भेजना चाहिए, अपने गुनाहों की निरंतर क्षमा याचना करनी चाहिए, और इस्तिग़फ़ार (अल्लाह तआला से क्षमा

माँगने की दुआ) के पाठ में नियमितता अपनानी चाहिए। उन्हें दिल की गहराइयों से अल्लाह तआला की नेमतों को याद रखना चाहिए और उसकी प्रशंसा को अपना दैनिक अभ्यास बनाना चाहिए।”

अल्लाह तआला से निकटता कैसे प्राप्त होती है—इस संबंध में प्रायः उठाए जाने वाले प्रश्न का उत्तर देते हुए, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने स्पष्ट किया कि यह संबंध अल्लाह की याद और उसके प्रति कृतज्ञता के माध्यम से विकसित होता है। उन्होंने कहा कि बैअत की प्रतिज्ञा स्वयं एक स्पष्ट मार्ग निर्धारित करती है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति को निरंतर अल्लाह की नेमतों को याद करना और उसकी प्रशंसा को अपने जीवन का नियमित हिस्सा बनाना होता है। इस संदर्भ में उन्होंने कहा:

“जब तुम उसकी प्रशंसा करते हो और उसकी नेमतों को याद रखते हो, तो अल्लाह तआला से निकटता स्वतः ही प्राप्त हो जाती है।”

इसके बाद, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया कि जो लोग इस अनुबंध में प्रवेश कर चुके हैं, उन्हें कभी भी अल्लाह की सृष्टि को अन्यायपूर्ण रूप से हानि नहीं पहुँचानी चाहिए—चाहे वह शब्दों के माध्यम से हो, कर्मों के द्वारा हो या किसी अन्य प्रकार से—और यह दायित्व सामान्य रूप से सभी मनुष्यों पर तथा विशेष रूप से अपने सहधर्मी मुसलमानों के प्रति लागू होता है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने आगे स्पष्ट किया कि सच्ची बैअत हर परिस्थिति में अल्लाह तआला के प्रति अडिग निष्ठा की मांग करती है। चाहे सुविधा हो या कठिनाई, एक मोमिन को दृढ़ रहना चाहिए और अल्लाह तआला की इच्छा पर संतोष बनाए रखना चाहिए।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“हमें अल्लाह तआला की राह में हर प्रकार की कठिनाई सहने के लिए तैयार रहना चाहिए, और कठिन समय या परीक्षा की घड़ी में कभी भी उससे मुँह नहीं मोड़ना चाहिए... अल्लाह तआला के सिवा हमारे लिए कोई और शरण नहीं है। हमें केवल उसी के सामने सिर झुकाना चाहिए, और जब हम निरंतर उसी के सामने झुकते रहते हैं तथा उसकी इबादत का हक़ दृढ़ता के साथ अदा करते हैं, तो बदले में अल्लाह तआला अपनी विशेष कृपा नाज़िल करता है।”

इसके पश्चात, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने यह भी स्पष्ट किया कि मसीह मौउद (उन पर शांति हो) के अनुयायियों ने यह प्रतिज्ञा भी की है कि वे अहंकार और घमंड जैसी आध्यात्मिक बीमारियों से स्वयं को मुक्त करेंगे।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“यदि तुम मसीह मौउद (उन पर शांति हो) की बैअत में प्रवेश कर चुके हो, तो तुम्हें कुछ [आध्यात्मिक] रोगों को भी त्यागना होगा—विशेष रूप से यह कि कभी भी अहंकार को अपने भीतर स्थान न दो। अहंकार की बीमारी को पूर्ण रूप से छोड़ दो। घमंड को त्यागो और इसके स्थान पर विनम्रता, नम्र स्वभाव

तथा उत्तम नैतिक आचरण जैसे गुणों को अपनाओ। तुम्हें कोमलता और सादगी से युक्त जीवन व्यतीत करने का संकल्प करना चाहिए। केवल तभी तुम सच्चे अहमदी बन सकोगे। अतः हमें इस बात को सदैव अपने सामने रखना चाहिए और निरंतर यह मूल्यांकन करते रहना चाहिए कि ये गुण हमारे भीतर किस सीमा तक मौजूद हैं।”

इसके पश्चात, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने स्पष्ट किया कि बैअत में प्रवेश करने का अर्थ यह है कि ईमान और धर्म की प्रतिष्ठा को हर प्रकार के व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखा जाए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सच्ची बैअत अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए पूर्ण समर्पण और आवश्यकता पड़ने पर त्याग करने की तत्परता की मांग करती है। उन्होंने जमाअत को यह स्मरण कराया कि यद्यपि यह प्रतिज्ञा अनेक अवसरों पर दोहराई जाती है, किंतु इसका वास्तविक मूल्य केवल शब्दों में नहीं, बल्कि इसे अपने जीवन के केंद्र में रखते हुए व्यवहारिक रूप से उस पर अमल करने में निहित है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने आगे स्पष्ट किया कि अल्लाह की सृष्टि के प्रति करुणा ईमान का एक अनिवार्य अंग है, और ऐसी करुणा का उद्देश्य केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करना होना चाहिए।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“तुम मसीह मौउद (उन पर शांति हो) की बैअत का वास्तविक हक़ उसी समय अदा कर सकते हो, जब तुम्हारे भीतर अल्लाह तआला की सृष्टि के प्रति करुणा हो, और यह करुणा केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हो। जहाँ तक संभव हो, और अल्लाह तआला द्वारा प्रदान की गई क्षमताओं और नेमतों का उपयोग करते हुए, तुम्हें मानवता के लाभ के लिए प्रयास करना चाहिए। इसमें वित्तीय बलिदान, समय का त्याग और सहायता के अन्य रूप भी सम्मिलित हैं। अतः जिस किसी भी प्रकार से कोई व्यक्ति दूसरों की सहायता कर सकता है और अल्लाह की सृष्टि की सेवा कर सकता है, उसे अवश्य करना चाहिए।”

इसके पश्चात, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया कि बैअत की वास्तविक पूर्ति केवल मसीह मौउद (उन पर शांति हो) के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता और निष्ठा के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह आज्ञाकारिता व्यवहारिक होनी चाहिए और व्यक्ति के आचरण, शिक्षाओं के प्रति उसकी प्रतिबद्धता तथा उन उद्देश्यों के पालन में परिलक्षित होनी चाहिए, जिनके लिए मसीह मौउद (उन पर शांति हो) को भेजा गया था।

मसीह मौउद (उन पर शांति हो) के मिशन और उन उद्देश्यों के संदर्भ में, जिनके लिए उन्हें इस संसार में भेजा गया, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“मसीह मौउद (उन पर शांति हो) इस संसार में इस उद्देश्य से आए कि समय के प्रवाह और भटके हुए लोगों के कृत्यों के कारण इस्लाम की शिक्षाओं पर जो गर्द जम गई थी, उसे दूर करें और इस्लाम को एक बार फिर उसके शुद्ध और दीप्तिमान रूप में संसार के समक्ष प्रस्तुत करें। उनका मिशन यह था कि हज़रत

मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम द्वारा लाई गई मूल धर्म-व्यवस्था को लोगों के सामने रखा जाए, उस पर व्यवहारिक रूप से अमल करने के लिए प्रेरित किया जाए, और इसी उद्देश्य के लिए एक जमाअत को तैयार किया जाए।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने आगे फ़रमाया:

“अतः यही वे उद्देश्य थे जिनके लिए उन्हें भेजा गया था। उन्होंने फ़रमाया कि केवल उसी समय तुम बैअत का हक़ अदा कर सकोगे, जब तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जाए कि हर पहलू से तुम मेरी आज्ञा का पालन करो, और कोई भी सांसारिक संबंध, लगाव या दासता की कोई स्थिति इस बंधन में बाधा न बने।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने प्रत्येक व्यक्ति को आत्मिक निष्ठा के साथ आत्म-मंथन करने की प्रेरणा दी और यह मूल्यांकन करने को कहा कि वे अपने दैनिक जीवन में इन शिक्षाओं पर किस हद तक अमल कर रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि यद्यपि बैअत की प्रतिज्ञा और जलसों में भागीदारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है, किंतु उनका वास्तविक उद्देश्य एक इबादतपूर्ण वातावरण का निर्माण करना है। मसीह मौउद (उन पर शांति हो) द्वारा स्थापित जलसा की संस्था के माध्यम से ऐसा आध्यात्मिक वातावरण उत्पन्न किया गया है, जो लोगों को पुनः अल्लाह तआला से जोड़ता है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“अतः संसार भर में इस समय मेरी बात सुनने वाला प्रत्येक अहमदी सदैव यह स्मरण रखे कि हमें अपनी आध्यात्मिक उन्नति और बैअत की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास करते रहना चाहिए। हमें इन बातों को निरंतर अपने सामने रखना चाहिए, पूरी क्षमता के साथ उन पर अमल करने का प्रयास करना चाहिए और कभी भी उनसे दूर नहीं होना चाहिए।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने इस बात पर प्रकाश डाला कि मसीह मौउद (उन पर शांति हो) के अनुसार एक ऐसी विशेषता है जो अन्य सभी गुणों से बढ़कर है, और वह है तक्रवा (परहेज़गारी/धार्मिकता)। मसीह मौउद (उन पर शांति हो) के शब्दों को उद्धृत करते हुए, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“केवल शब्दों का कोई लाभ नहीं जब तक उनके साथ कर्म न हों। यदि तुम इस्लाम की सेवा करना चाहते हो, यदि तुम अपनी बैअत का हक़ अदा करना चाहते हो, तो सबसे पहले अपने भीतर तक्रवा और पवित्रता को अपनाओ। जब तुम ऐसा करोगे, तो तुम अल्लाह तआला की सुरक्षा के एक दृढ़ किले में प्रवेश कर जाओगे—ऐसा शक्तिशाली दुर्ग कि कोई भी हानि तुम्हें नहीं पहुँचा सकेगी।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने आगे फ़रमाया:

“एक अन्य स्थान पर मसीह मौउद (उन पर शांति हो) ने फ़रमाया कि केवल तक्रवा ही ऐसी विशेषता है जिसे शरीअत (इस्लामिक क़ानून) का सार कहा जा सकता है। यदि कोई शरीअत का संक्षिप्त वर्णन करना चाहे, तो शरीअत का मूल सार तक्रवा ही है। अतः यह एक बुनियादी विषय है जिसे हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए। केवल उसी स्थिति में, जब हमारे भीतर तक्रवा हो, हम यह कह सकते हैं कि हमारा मुसलमान होना और हमारा अहमदी होना वास्तव में हमारे लिए लाभदायक है; अन्यथा ऐसा नहीं हो सकता।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने स्पष्ट किया कि दुआ की स्वीकृति का तक्रवा (परहेज़गारी/धार्मिकता) से अविच्छिन्न संबंध है, और अल्लाह तआला ने तक्रवा को अपनी स्वीकृति की एक मूल शर्त के रूप में स्पष्ट रूप से स्थापित किया है। अतः हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने उपस्थित जनसमूह को स्मरण कराया कि तक्रवा के लिए प्रयास किए बिना दुआओं के स्वीकार होने की अपेक्षा करना, वास्तव में स्वयं ईमान की सही समझ न होने को दर्शाता है।

उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि जमाअत के प्रत्येक सदस्य के लिए सक्रिय रूप से तक्रवा के मार्ग पर चलना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि केवल इसी प्रकार व्यक्ति स्वीकृत दुआओं से उत्पन्न होने वाली प्रसन्नता और अल्लाह तआला के साथ गहरे होते संबंध का अनुभव कर सकता है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“अतः यह स्मरण रखो कि तुम्हारी सफलता तक्रवा में निहित है। यदि तुम्हें सफलता प्राप्त नहीं हो रही, तो इसका अर्थ यह है कि तक्रवा विद्यमान नहीं है और ईमान दुरुस्त नहीं है। केवल उसी स्थिति में तुम सफल हो सकते हो जब तुम्हारे भीतर तक्रवा हो। शिकायतें की जाती हैं कि परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हैं, कि अमुक स्थान पर कठिनाइयाँ हैं। यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिए कि इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने भीतर तक्रवा को विकसित करें, अल्लाह तआला के साथ एक विशेष संबंध स्थापित करें, और इतनी सूक्ष्मता के साथ ध्यान दें कि हमारे किसी भी कर्म, किसी भी कार्य और किसी भी विचार में शिर्क (ईश्वर के साथ साझी ठहराने) का लेश मात्र भी न हो, और हमारे भीतर शिर्क का कोई छिपा या गुप्त रूप शेष न रहे। यह अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, और मसीह मौउद (उन पर शांति हो) ने बार-बार इसके संबंध में हमें चेतावनी दी है। हमें सदैव इस पर सजग रहना चाहिए।”

मसीह मौउद (उन पर शांति हो) के शब्दों को उद्धृत करते हुए, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“मसीह मौउद (उन पर शांति हो) ने आगे फ़रमाया: ‘मैं इतनी तीव्रता से दुआ करता हूँ कि कई बार दुआ करते-करते मुझ पर कमजोरी छा जाती है, और कभी-कभी तो बेहोशी और अत्यधिक थकावट की अवस्था तक पहुँच जाता हूँ। तुम्हारे लिए मेरी इस व्याकुलता की यही दशा है—कि अल्लाह तआला जमाअत के भीतर ऐसी तक्रवा पैदा कर दे।’”

मसीह मौउद (उन पर शांति हो) का यह कथन उद्धृत करने के बाद, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“अतः यह सुनकर हमें स्वयं का आत्म-मूल्यांकन करना चाहिए कि हम तक़वा के मार्गों पर चलकर अपनी बैअत की प्रतिज्ञा को किस सीमा तक पूरा कर रहे हैं। जिस हस्ती से हमने बैअत की है, वह हमारे लिए इतनी व्याकुल अवस्था में है कि हमारे लिए निरंतर दुआ करते हुए उस पर थकावट छा जाती है।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने आगे फ़रमाया:

“इसलिए यह गहन चिंतन और भय का क्षण है कि कहीं अल्लाह तआला हमें उन बरकतों से वंचित न कर दे, जिन्हें हमें बैअत में प्रवेश करने के कारण प्राप्त होना चाहिए। मसीह मौउद (उन पर शांति हो) ने फ़रमाया कि जब तक जमाअत अल्लाह तआला की दृष्टि में परहेज़गार न बन जाए, तब तक उसकी सहायता उसके साथ नहीं हो सकती। स्वयं को परहेज़गार समझ लेना पर्याप्त नहीं है; बल्कि अल्लाह तआला की दृष्टि में परहेज़गार बनना आवश्यक है। अतः अल्लाह तआला की सहायता हमारे साथ रहने के लिए, परहेज़गारी को अपना अनिवार्य है।”

अपने संबोधन के अंत की ओर, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने वह दुआ पढ़ी, जिसे मसीह मौउद (उन पर शांति हो) ने अपने अनुयायियों के लिए लिखा था ताकि वे उसे पढ़ा करें।

मसीह मौउद (उन पर शांति हो) फ़रमाते हैं:

“हे सारे जहानों के रब! मैं तेरी नेमतों का पूर्ण रूप से शुक्र अदा करने में असमर्थ हूँ। तू अत्यंत दयालु और उदार है, और मुझ पर तेरी नेमतें असीमित हैं। मेरे गुनाहों को क्षमा कर दे, अन्यथा मैं विनष्ट हो जाऊँगा। मेरे हृदय में अपनी पवित्र मुहब्बत स्थापित कर दे, ताकि मैं वास्तविक जीवन प्राप्त कर सकूँ। मेरे दोषों को छिपा दे और मुझे ऐसे कर्म करने की तौफ़ीक़ दे, जिनसे तेरी प्रसन्नता प्राप्त हो। मैं तेरे सम्मानित मुख के द्वारा इस बात की शरण चाहता हूँ कि तेरा क्रोध मुझ पर नाज़िल न हो। मुझ पर दया कर और मुझे इस संसार तथा परलोक की आपदाओं से सुरक्षित रख, क्योंकि प्रत्येक अनुग्रह और वरदान केवल तेरे ही हाथों में है।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“अतः ये दुआएँ हमें सिखाने के लिए प्रस्तुत की गई थीं, और उन्होंने हमें इस प्रकार दुआ करने की प्रेरणा दी। इसी प्रकार दुआ करो और अल्लाह तआला के साथ संबंध स्थापित करो; इसके लिए दुआ करते रहो, और अल्लाह तआला इस संबंध को निरंतर सुदृढ़ करता रहेगा।

अतः यदि हम इन बातों पर अमल करें, तो इंशाअल्लाह हम उन उद्देश्यों को प्राप्त कर लेंगे जिनके लिए मसीह मौउद (उन पर शांति हो) को भेजा गया था, और जिनके लिए हमने उनसे बैअत की थी। यदि हम

मसीह मौउद (उन पर शांति हो) की दुआओं के वारिस बनना चाहते हैं, और विशेष रूप से उन दुआओं के, जो उन्होंने जलसा में सम्मिलित होने वालों के लिए की थीं, तो हमें सदैव इन बातों को अपने सामने रखना होगा।”

इसके पश्चात, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने जमाअत के सदस्यों को निर्देश दिया कि वे बैअत की शर्तों के शब्दों को निरंतर पढ़ते रहें, उन पर चिंतन करें और उन्हें अपने घरों में प्रदर्शित रखें।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने फ़रमाया:

“बैअत की प्रतिज्ञा को समझने और स्वयं को बार-बार उसकी याद दिलाने के लिए, हमें उसे सदैव अपने सामने रखना चाहिए, या उसे ऐसी जगह रखना चाहिए जहाँ हमारी दृष्टि उस पर बार-बार पड़े। लोग अनेक बातों को फ़्रेम में लगाकर रखते हैं; यदि इसे भी फ़्रेम में लगाकर प्रदर्शित किया जाए, तो यह केवल लाभकारी ही होगा।”

अपने संबोधन के अंत में, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने निम्नलिखित शब्दों में दुआ की:

“अल्लाह तआला करे कि हम में से प्रत्येक अपने हालात में शुद्ध परिवर्तन लाए और बैअत की शर्तों को पूरा करने के प्रयास में निरंतर लगा रहे। इस विषय में मसीह मौउद (उन पर शांति हो) ने गहरी व्याकुलता के साथ असंख्य नसीहतों की हैं। यदि हम उनकी नसीहतों और हमारे लिए की गई उनकी दुआओं के वारिस बनना चाहते हैं, तो हमें अपने कर्मों को बदलना होगा और अपने भीतर एक स्पष्ट और प्रत्यक्ष परिवर्तन उत्पन्न करना होगा। केवल तभी हम उस उद्देश्य को प्राप्त कर सकेंगे जो हमारी बैअत का वास्तविक प्रयोजन है। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।”



Tariq Ahmad K

Incharge Press & Media,
Ahmadiyya Muslim Jama'at India.